IJAER/ March-April 2023/Volume-12/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

मथुरा के मन्दिरों में भित्ती चित्रण–एक समीक्षात्मक अध्ययन

नाम – श्रीमती रेखा गुप्ता (शोधार्थी) , मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़ ,राजस्थान।

शोध निर्देशिका – प्रोफेसर डॉ० चित्रलेखा सिंह (डीन), मानविकी, सामाजिक विज्ञान , ललित कला , योग एवं ज्योतिष विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़ ,राजस्थान।

शोध सहनिर्देशिका – प्रोफेसर डॉ० सरोज भार्गव (शिक्षाविद्), पूर्व निर्देशिका–ललित कला संस्थान, डॉ०बी०आर० अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा।

सारांश –

इस अध्ययन में मथुरा तीर्थ स्थल पर आने वाले भक्तों व दर्शकों की मंदिरों में बने भित्ति चित्रों के प्रति अभिव्यक्ति को प्रभावित करने वाले कारकों की जांच की गयी है। इस अध्ययन में दृश्यात्मक अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया। मथुरा के मंदिरों में बने भित्ति चित्रों के आकर्षण, तकनीकी कुशलता एवं धार्मिक विषय की निपुणता के आधार पर यह चित्र दर्शकों की मनोवृत्ति अपनी ओर खींचने , मंगल विचारों का उद्धरण करने तथा वातावरणीय ऊर्जा को सकारात्मक बनाने में सक्षम पाए गए।

शोध का उद्देश्य एवं आवश्यकता –

मथुरा भूमि को तीनों लोकों में पवित्र भूमि माना गया है। भगवान कृष्ण की जन्म भूमि मथुरा रामायण काल से ही कलाओं में श्रेष्ठ रही है। स्थापत्य कला, मूर्ति कला, पात्र सज्जाकारी, छप्पन भोग, वस्तु सज्जाकारी, गीत, संगीत, अभिनय एवं भित्ति चित्रकारी में मथुरा अग्रणी है। प्रारम्भ में भित्ति चित्रकारी मन्दिरों में देखने के लिये मिलती थी किन्तु अब ब्रज तीर्थ विकास ट्रस्ट के सफल प्रयासों का परिणाम है कि यहाँ स्थान स्थान पर भित्ति चित्रकारी देखने के लिये मिलती है । गोवर्धन चौराहा, टैंक चौराहा, स्टेट बैंक, टाउनशिप, चौराहा, मसानी चौराह, नया बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन आदि सभी जगह सुन्दर भित्ति चित्र रचनाओं में भगवान कृष्ण के जीवन से सम्बन्धित कथानकों को चित्रित किया गया है। श्रीकृष्ण जन्म स्थान में गीता भवन से ऊपर की ओर बनवाये गये हॉल में राधे कृष्ण के मनमोहक दर्शन हैं साथ ही अन्य देवी देवताओं की मूर्तियों को भी स्थापित किया गया है। इस हॉल की पूरी पूरी छतें चित्रकारी मे सुसज्जित हैं – चित्रों में रास लीला, राधा कृष्ण के मनमोहक स्वरूपों एवं कृष्ण जीवन से सम्बन्धित कथाओं के चित्रण हैं। यहाँ कैमरा वाधित होने के कारण ये सुन्दर चित्ररचनायें विश्व स्तरीय जन मानस से छूटी हुयी हैं।

मथुरा क्षेत्र के भित्तीय चित्रों की मुख्य विशेषतायें–

जिस प्रकार अजन्ता के भित्तीय चित्र बौद्ध धर्म को प्रचारित प्रसारित करते हैं ठीक उसी प्रकार हिन्दु धर्म के अनुयायियों ने अपने ईष्ट देव के निवास स्थल मथुरा भूमि के मन्दिर व अन्य दीवारों पर अपने आराध्य के प्रति उमड़ते प्रेम को तकनीकी दक्षता के साथ सुन्दर रंग योजना में तूलिका व रंगों के माध्यम से संरचित करते हैं । ये चित्र रचनायें पारंपरिक आकल्पन का सादृश्य रूप हैं। दर्शनार्थी इनके सौन्दर्य को निहारते हुए कहीं खो जाता है एवं मन्दिर स्थलों में दिव्य अनुभा के साथ सुकून की भावना से अभिभूत इन चित्रों में उन्मुक्त आवेग और रेखीय ऊर्जा का संचार होने से अनूठी ताजगी की अनुभूति होती है जो कि चाक्षुष सौंदर्य की सृष्टि करती है । मधुरा क्षेत्र में बनी चित्र रचनाओं में विशेष रूप से कृष्ण की जीवन से संबंधित चित्र रचनाओं के साथ–साथ भगवान शिव माता अन्नपूर्णा देवी, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, सुदामा चरित्र व अन्य देवी देवताओं की चित्र भी बनाये गए हैं। कृष्ण को गोकुल ले जाते वासुदेव, नन्दोत्सव, माखन चुराते कृष्ण एवं बलराम, ग्वालवालों के साथ खेलते हुए कृष्ण , पूतना वध, कालिया दमन लीला, कृष्ण गोवर्धन पर्वत उठाते हुए, कंस का वध, माखन दान लीला एवं रासलीला आदि कथाओं का चित्रण किया गया है।

मथुरा के कलाकारों के द्वारा प्रस्तुत इन चित्रों में रेखा प्रधान व सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम है । सुदृढ़ रेखाओं के माध्यम से ही विषय को साक्षात स्वरूप प्रदान किया गया है। इन चित्रों में रेखा आवश्यकता के अनुसार कहीं हल्की, तो कहीं गहरी, सीधी , वक्र, चक्राकार, कोणीय, विकर्णीय एवं लयात्मक रेखाओं के माध्यम से चित्रों में त्रिआयामी प्रभाव दिखायी देता है। भगवान कृष्ण को कहीं बाँसुरी पकड़े हुये बनाया गया है तो कहीं माखन मटकी के साथ, कहीं राधा को मनाते हुये चित्रित हैं तो कहीं रूठते हुए। कहीं माँ यशोदा के साथ अपनी खेल लीलायें करते हुए चित्रित किये गये हैं तो कहीं ग्वाल वालों के साथ गाय चराते हुए भी चित्रित किये गये हैं। कहीं अर्जुन को गीता का उपदेश देते कृष्ण चित्रित हैं तो कही गुरु संदीपनी के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करते हुए चित्रित किया गया है । कृष्ण स्वरूप में बाल घुंघराले व आंखें बड़ी बड़ी बनाई गई है माथे पर टीका है तो शीश पर मुकुट के साथ मोर पंख धारण किए हुए हैं कहीं–कहीं बालस्वरूप में मुकुट के स्थान पर बालों की जूड़ी मोतियों से सुसज्जित की गई है। उनके कानों में कुंडल, गले में मोतियों व सोने के आभूषणबनाए गए हैं। हाथों में कड़े व मोतियों की माला बनाई गई है। गोवर्धन धारी कृष्ण की आकृति में उन्हें गले में वैजयंती माला पहने हुए बनाया जाता है । कृष्ण स्वरूप बनाते समय कलाकार आभूषणों व उनके वस्त्रों की सज्जा कारी को उतनी ही लगन से बनाते हैं जितने की चेहरे को । कृष्ण को अधिकांशतः पटका व धोती धारण किए हुए बनाया गया है। उनके वस्त्रों को रेशमी प्रभाव का बनाने के लिए वस्त्र के रंगों में छाया प्रकाश का प्रयोग किया गया है। कृष्ण के वस्त्रों में सुनहरी आभा का बॉर्डर भी बनाया जाता है और वस्त्रों के बॉर्डर का डिजाइन अत्यधिक सुंदर बनाया जाता है। राधारानी की छवि बनाने के लिए मुखाकृति गोल या अण्डाकार बनाई जाती है। उनके बाल घुंघराले या चोटी में गुथे हुए बनाए जाते हैं। बालों में पुष्प या गजरा सुसज्जित किया जाता है। माथे पर बिंदिया , कानों में कुंडल व झुमके नाक में नथनी गले में हार व मोतियों की माला कमर में कमर बंध हाथों में चूड़ियां धारण किए बनाया जाता है। उनकी आंखें मछली की आकृति के समान कोमल व बड़ी बनायी जाती हैं। हाथ की उंगलियां पतली पतली बनाई जाती हैं उनके लहंगे की एक–एक फोल्ड में रंगों की हल्की व गहरी टोन का

श्रेष्ठ मिश्रण देखने के लिए मिलता है। उनके कजरारे नैन तीखी नाक व पतले होठ उनकी कृति को सौंदर्य प्रदान करती हैं उनकी हस्त मुद्राएं व अंग भंगिमायें से चित्र के विषय को संपूर्णता प्रदान की जाती है। मथुरा की भित्ति चित्रकारी में नारी आकृति को सिर पर ओढ़नी पहने हुए बनाया जाता है।

मथुरा के भित्ति चित्रों में पृष्ठभूमि में भवन के अग्रभाग, छज्जा, झरोखा, स्तंभ, द्वार आदि को चित्रित किया गया है। मथुरा की कला शैली का स्वरूप गांधार कला शैली से मिलता–जुलता है। यहां भवन निर्माण एवं मूर्तिकला की प्रधानता होने के कारण भवनों में उत्कीर्णत चित्र रचनाएं भी दिखाई देती हैं ।

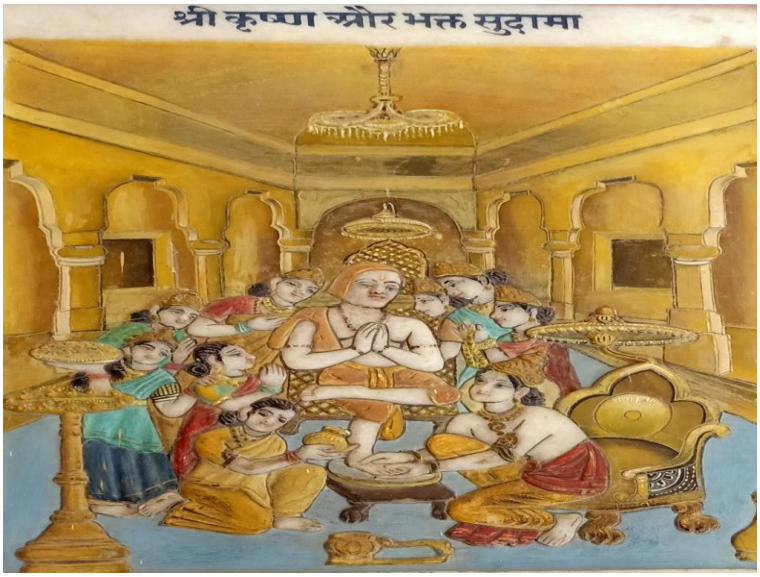

मथुरा के बिरला मंदिर के सभा मंडप की दीवारों पर उत्कीर्णित चित्र बनाए गए हैं । कृष्ण– अर्जुन रथ , गीता उपदेश के उत्कीर्णित चित्रों की रचनाएं यहां देखने के लिए मिलती हैं। चित्र की पृष्ठभूमि मेंसुंदर प्रकृति चित्रण भी दिखाई देता है । फल और फूलों से लदे हुए पेड़ पौधे यहां के प्रकृति चित्रण की विशेषता है। कदम्ब के वृक्ष, वटवृक्ष, केले के वृक्ष चित्र के सौंदर्य को और भी अधिक बढ़ा देते हैं। यहां के भित्ति चित्रों में राजस्थानी कला शैली में बने पेड़ पौधों की झलक दिखाई देती है। पेड़ की एक–एक पत्ती, टहनी, तना, पुष्प, कली व फूल को बारीकी के साथ बनाया गया है। प्रकृति के सौंदर्यमयी वातावरण में नाचते हुए मोर, गाय व अन्य पशु पक्षी चित्रित किए गए हैं। यहां चित्रकारों ने भित्ति चित्र बनाने के लिए चित्र भूमि को तीन भागों में बांटा है पृष्ठभूमि, मध्य भूमि व अग्रभूमि। पृष्ठभूमि में आकाश, पक्षी, सूर्य, चंद्रमा, चमकती हुई बिजली, बादल, पेड़ – पौधे, इमारतें आदि बनाए गए हैं। मध्य भूमि में विषय वस्तु को चित्रित किया गया है जबकि अग्र भूमि में यमुना नदी का किनारा या छोटे छोटे फूलों के पौधे, मोर या गाय को बनाया गया है। कलाकारों ने आगे की आकृति को बढ़ा व पीछे की आकृति को छोटा बनाकर परिप्रेक्ष्य के नियम का भी ध्यान रखा है।भाव भंगिमा – मथुरा के मंदिरों में बने कृष्ण जीवन से संबंधित विषयों पर चित्रांकन के लिए कलाकार के मन में कृष्ण की भक्ति के प्रति भावों का होना जरूरी है । कृष्ण भक्ति का भाव ध्यान करने से आता है। साधना में डूबने से आता है । मन की पवित्रता से आता है। जो कलाकार भाव के साथ शास्त्रों का ,परम्पराओं का , लोककलाओं का अध्ययन कर चित्र कृति का सर्जन करता है तो उसकी कृति दीर्घ काल तक जिन्दा रहती हैं । चाहे वो अजन्ता की कला हो, पारम्परिक कला हो या कोई भी ललित कला क्यों न हो ।

तकनीकी सौन्दर्य– भित्ति चित्र रचनाओं में अजंता की चित्रकारियों को सर्वश्रेष्ठ माना जाता था किंतु इससे प्रेरणा लेकर ब्रज के कलाकारों ने आगे कदम बढ़ाया है नवीन तकनीकी प्रयोगों से चित्रों को त्रिआयामी बनाया गया है। यहां के भित्ति चित्रों में न केवल चित्रकला बल्कि उत्कीर्णित कला व मूर्तिकला का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है।

शोध निष्कर्ष – मथुरा के मंदिरों में बनी भित्ति चित्रकलाएं हिंदू धर्म की सच्ची धरोहर हैं । ये कलाएं विदेशी प्रभाव से मुक्त हैं अपनी मौलिकता , सुंदरता, रचनात्मकता, विविधता व कलात्मकता का परिचय देती हुई यह कलाएं आज नहीं तो कल विश्व की महत्वपूर्ण चित्रकारी अवश्य मानी जाएंगी।

संदर्भ साहित्य –

•आनंद डी. कृष्णा– द लिविंग गॉड ऑफ ब्रिज अभिनव पब्लिकेशन 1992.

•ब्रोकर, जॉन, द कैंब्रिज इल्युसट्रेटेड हिस्ट्री ऑफ रिलीजियन्स , कैंब्रिज यूनिवर्सिटी

•भार्गव सरोज, सौंदर्य बोध एवं ललित कलाएं, कला पब्लिकेशन, 1999

•ड्रेके डी.एल., ब्रोकिमेन,मथुरा ए गेजेट्टर फ्रॉम बुक्स फ्रॉम इंडिया , ऑस्कर पब्लिकेशन 1911

•सिंह चित्रलेखा, प्रेमनाथ, द ग्रेट रिलीजन ऑफ द वर्ल्ड, क्राइस्ट पब्लिकेशन, हाउस